आचार्य देवनन्दि पूज्यपाद

जीवन-परिचय : भारतीय जैन परम्परा में जो लब्धप्रतिष्ठ ग्रन्थकार हुए हैं, उनमें आचार्य पूज्यपाद (देवनन्दि) का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इन्हें विद्वत्ता और प्रतिभा का समान रूप से वरदान प्राप्त था। जैन परम्परा में स्वामी समन्तभद्र और आचार्य सिद्धसेन के बाद आचार्य पूज्यपाद को ही विशेष महत्ता प्राप्त है। ये अपने समय के प्रसिद्ध तपस्वी मुनिपुंगव (मुनियों में श्रेष्ठ) थे। वे साहित्य जगत के प्रकाशमान सूर्य थे, जिनके आलोक से समस्त वाङ्मय सदैव आलोकित रहेगा।

इनका दीक्षा नाम देवनन्दि था। बुद्धि की प्रखरता के कारण वे जिनेन्द्रबुद्धि कहलाये और देवों द्वारा उनके चरण पूजे गये थे, इस कारण वे लोक में पूज्यपाद नाम से प्रसिद्ध हुए।

आचार्य पूज्यपाद चरित और राजवलीकथे नामक ग्रन्थ में आपके पिता का नाम माधवभट्ट और माता का नाम श्रीदेवी दिया है। आप कर्नाटक देश के निवासी और ब्राह्मण कुल में उत्पन्न हुए थे। आपका जन्म कोले नामक ग्राम में हुआ था।

आचार्य पूज्यपाद के समय के सम्बन्ध में विशेष विवाद नहीं है। अनेक प्रमाणों के आधार पर इनका समय ई. सन् की छठी शताब्दी सिद्ध होता है, जो सर्वमान्य है।

कहा जाता है कि बचपन में इन्होंने नाग द्वारा एक मेढ़क को निगल जाने का दृश्य देखकर और मेढ़क की तड़पन देखकर संसार से विरक्त होकर दिगम्बरी दीक्षा ग्रहण कर ली थी।

देवनन्दि-पूज्यपाद व्याकरण, काव्य, सिद्धान्त, वैद्यक और छन्द आदि विविध विषयों के मर्मज्ञ विद्वान थे। जैनेन्द्र व्याकरण के कर्त्ता के नाम से ही इनकी प्रसिद्धि है। ये मूलसंघान्तर्गत नन्दिसंघ के प्रधान आचार्य थे। जिनसेन स्वामी ने इनकी स्तुति करते हुए लिखा है—

''कवीनां तीर्थकृद्देवः किं तरां तत्र वर्ण्यते।
विदुषां वाङ्मलध्वंसि तीर्थं यस्य वचोमयम्।।

अर्थात् जो कवियों में तीर्थंकर के समान थे और जिनका वचनरूपी तीर्थ विद्वानों के वचनरूपी मल को धोनेवाला है, उन देवनन्दि आचार्य की स्तुति करने में कोई भी समर्थ नहीं है।

आचार्य गुणनन्दि, महाकवि धनंजय, वादिराज और पद्मप्रभ आदि अनेक विद्वानों ने आपका स्तवन किया है। आप नन्दिसंघ के प्रधान आचार्य थे। महान दार्शनिक, अद्वितीय वैयाकरण, अपूर्व वैद्य, धुरंधर कवि, बहुत बड़े तपस्वी, सातिशय योगी और पूज्य महात्मा थे।

आचार्य पूज्यपाद की कविता में काव्यतत्त्व की अपेक्षा दर्शन और अध्यात्मतत्त्व अधिक है। सर्वार्थसिद्धि ग्रन्थ से इनकी विद्वत्ता का अनुमान किया जा सकता है। नैयायिक आदि दर्शनों की समीक्षा कर इन्होंने अपनी विद्वत्ता प्रकट की है।

आचार्य पूज्यपाद ने कवि के रूप में अध्यात्म, आचार और नीति का प्रतिपादन किया है।

आपके जीवन की अनेक घटनाएँ हैं। यथा-

1. **विदेहगमन :** आचार्य पूज्यपाद को गगनगामी विद्या प्राप्त थी, जिससे वे विदेह क्षेत्र जाया करते थे।

2. **नेत्र ज्योति प्राप्त होना :** किसी कारण एक दिन उनकी आँखों की ज्योति नष्ट हो गयी थी। अतएव उन्होंने शान्त्यष्टक स्तोत्र की रचना की और एकाग्रता से उसका पाठ किया, जिससे उनकी नेत्र ज्योति पुनः प्रकट हो गयी।

3. **चरणों की पूजा :** देवतागण आपके चरणों की पूजा करते थे।

4. **औषधऋद्धि :** इन्हें औषध ऋद्धि भी प्राप्त थी।

5. **लोहा बनता सोना :** इनके पाद के स्पर्शजल के प्रभाव से लोहा सोना बन जाता था।

रचना-परिचय : आपके द्वारा रचित ग्रन्थ निम्न हैं—

1. **सर्वार्थसिद्धि (तत्त्वार्थवृत्ति) :** आचार्य पूज्यपाद की यह महनीय कृति है। तत्त्वार्थसूत्र ग्रन्थ पर गद्य में लिखी गयी यह मध्यम परिमाण की वृत्ति है। इसमें सिद्धान्त के साथ दार्शनिक विवेचन भी है। इसको तत्त्वार्थवृत्ति या सर्वार्थसिद्धि कहा गया है। आचार्य देवनन्दि ने तत्त्वार्थसूत्र की यह बहुमूल्य टीका बनाकर पाठकों को ज्ञान की विपुल सामग्री प्रस्तुत की है।

2. **समाधितन्त्र :** इस ग्रन्थ का दूसरा नाम समाधिशतक भी है। इसमें 105

पद्य हैं। अध्यात्म विषय का बहुत ही सुन्दर विवेचन इस ग्रन्थ में है। बहिरात्मा, अन्तरात्मा और परमात्मा के स्वरूप का विस्तारपूर्वक विवेचन बहुत ही सरल और सरस कथन में किया है। इसके अध्ययन से मन प्रसन्न हो जाता है और मनुष्य को अपनी भूल का बोध जाता है।

3. **इष्टोपदेश :** इष्टोपदेश 51 पद्यों का छोटा सा लघुकाय ग्रन्थ है, जो आध्यात्मिक रस से सरावोर है। इसकी रचना का एकमात्र हेतु यही है कि संसारी आत्मा अपने स्वरूप को पहचानकर शरीर, इन्द्रिय एवं सांसारिक अन्य पदार्थों से अपने को भिन्न अनुभव करने लगे। इस ग्रन्थ के अध्ययन से आत्मा की शक्ति विकसित हो जाती है।

4. **दशभक्ति :** जैनागम में भक्ति के अनेक भेद हैं। पूज्यपाद स्वामी की संस्कृत में सिद्धभक्ति, श्रुत-भक्ति, चारित्र-भक्ति, योगि-भक्ति, निर्वाण-भक्ति और नन्दीश्वर भक्ति—ये भक्तियाँ उपलब्ध हैं। काव्य की दृष्टि से ये भक्तियाँ बड़ी ही सरस और गम्भीर हैं।

5. **जन्माभिषेक :** श्रवणबेलगोला के अभिलेखों में पूज्यपाद की कृतियों में जन्माभिषेक का भी निर्देश आया है। वर्तमान में एक जन्माभिषेक उपलब्ध है। यह रचना प्रौढ़ और प्रवाहमय है।

6. **जैनेन्द्रव्याकरण :** यह आचार्य पूज्यपाद की व्याकरण पर आधारित मौलिक कृति है। यह पांच अध्यायों में विभक्त है। इसकी सूत्र संख्या तीन हजार के लगभग है।

7. **सिद्धिप्रिय-स्तोत्र :** इस स्तोत्र में 26 पद्यों में चतुर्विंशति तीर्थंकरों की स्तुति की गयी है। रचना प्रौढ़ और प्रवाहयुक्त है।

इन प्रमुख ग्रन्थों के अतिरिक्त पूज्यपाद के वैद्यक सम्बन्धी प्रयोग भी उपलब्ध हैं। वैद्यसारसंग्रह और छन्दशास्त्र सम्बन्धी ग्रन्थ भी इनके द्वारा रचित हैं, जो वर्तमान में उपलब्ध नहीं हैं।